

भारत सरकार
भारी उद्योग मंत्रालय

लोकसभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 2944
10.03.2026 को उत्तर के लिए नियत

कार्बन उत्सर्जन को कम करना

2944. श्री एम. के. राघवनः

क्या भारी उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार ने इस्पात, सीमेंट और इंजीनियरिंग वस्तुओं जैसे भारी उद्योगों में कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए कोई नीति बनाई है;

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है, और

(ग) हरित परिवर्तन के लिए उद्योगों को दी गई वित्तीय और प्रौद्योगिकीय सहायता का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

भारी उद्योग राज्य मंत्री
(श्री भूपतिराजू श्रीनिवास वर्मा)

(क) और (ख): वर्तमान में, भारी उद्योग मंत्रालय में ऐसी कोई स्कीम नहीं है। हालांकि, इस्पात मंत्रालय ने सूचित किया है कि निम्नलिखित कदम उठाए गए हैं:-

- (i) इस्पात मंत्रालय ने निम्न-उत्सर्जन वाले इस्पात को परिभाषित करने और वर्गीकृत करने के लिए मानक प्रदान करने हेतु 'ग्रीन स्टील के लिए टैक्सोनामी' जारी की है।
- (ii) इस्पात मंत्रालय ने "भारत में इस्पात क्षेत्र को हरित बनाना: रोडमैप और कार्य योजना" शीर्षक से एक रिपोर्ट जारी की है। यह रिपोर्ट इस उद्देश्य के लिए मंत्रालय द्वारा गठित 14 टास्क फोर्स की सिफारिशों के अनुरूप है, जो 2070 तक निवल-शून्य (नेट-जीरो) लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए हरित इस्पात और स्थिरता के लिए भविष्य का रोडमैप प्रदान करती है। यह रिपोर्ट इस्पात मंत्रालय की वेबसाइट पर उपलब्ध है।
- (iii) स्टील स्क्रेप पुनर्चक्रण नीति 2019 विभिन्न स्रोतों से उत्पन्न लौह स्क्रेप के पुनर्चक्रण (रीसाइक्लिंग) को सुविधाजनक बनाने और बढ़ावा देने के लिए विभिन्न मंत्रालयों के साथ एक समन्वय ढांचा प्रदान करती है।
- (iv) नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय द्वारा प्रशासित 'राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन' के तहत इस्पात क्षेत्र में हाइड्रोजन के उपयोग के लिए चार प्रायोगिक परियोजनाएं शुरू की गई हैं।

(ग): भारी उद्योग मंत्रालय के अंतर्गत सार्वजनिक क्षेत्रक उपक्रमों ने कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए निम्नलिखित इन-हाउस पहल की हैं:

I. भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (बीएचईएल):

- (i) बीएचईएल ने अमीन-आधारित कार्बन अवशोषण पद्धति का उपयोग करके अपने 0.25 टीपीडी 'कोयला-से-मेथनॉल' प्रदर्शन संयंत्र के साथ एकीकृत 1.4 टीपीडी कार्बन कैप्चर यूनिट के माध्यम से कार्बन कैप्चर के लिए अपने स्वदेशी समाधान का सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया है।
- (ii) बीएचईएल एनटीपीसी और आईजीसीएआर के साथ मिलकर स्वदेशी रूप से विकसित 'एडवांस अल्ट्रा सुपरक्रिटिकल टेक्नोलॉजी' (एयूएससी), सुपर क्रिटिकल पावर प्लांट की तुलना में कार्बन उत्सर्जन को लगभग 11% कम करके कोयला आधारित बिजली उत्पादन में सर्वश्रेष्ठ दक्षता प्रदान करती है।
- (iii) बीएचईएल ने देश भर में फैली अपनी विनिर्माण इकाइयों में कुल 35 मेगावाट (लगभग) के सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किए हैं।

II. सीमेंट कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (सीसीआई): सीसीआई ने अपनी इकाइयों से कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए फ्लाइ एश फीडिंग सिस्टम, हॉट एयर डक्ट और पुरानी मोटरों को बदलने का कार्य किया है। इसके अलावा, आरईएससीओ मोड में सौर संयंत्र भी स्थापित किए गए हैं।
